Concern over Cyber crimes in the Country

डा. लक्ष्मीकान्त बाजपेयी (उत्तर प्रदेश): महोदय, हम जितनी तेज़ी से डिजिटल दुनिया की ओर बढ़ रहे हैं, ठीक उतनी ही तेज़ी से साइबर अपराध की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। जिस गति से तकनीक ने उन्नति की है, उसी गति से मनुष्य की इंटरनेट पर निर्भरता भी बढ़ी है। एक ही जगह पर बैठकर इंटरनेट के ज़रिये मनुष्य की पहुँच विश्व के हर कोने तक आसान हुई है। आज के समय में इंटरनेट का उपयोग लगभग हर क्षेत्र में किया जाता है - जैसे सोशल नेटवर्किंग, ऑनलाइन शॉपिंग, डेटा स्टोर करना, गेमिंग, ऑनलाइन स्टडी, ऑनलाइन जॉब इत्यादि। इंटरनेट के विकास और इससे संबंधित लाभों के साथ साइबर अपराधों की अवधारणा भी विकसित हुई है।

भारत इंटरनेट का तीसरा सबसे बड़ा उपयोगकर्ता है और हाल के वर्षों में साइबर अपराध कई गुना बढ़ गए हैं। डिजिटल भारत कार्यक्रम की सफलता काफी हद तक साइबर सुरक्षा पर निर्भर करेगी। अतः भारत को इस क्षेत्र में तीव्र गति से कार्य करना होगा।

वर्तमान में भारत की बड़ी आबादी सोशल नेटवर्किंग साइट्स का उपयोग करती है। भारत में सोशल नेटवर्किंग साइट्स के उपयोग के प्रति लोगों में जानकारी का अभाव है। इसके साथ ही अधिकतर सोशल नेटवर्किंग साइट्स के सर्वर विदेश में हैं, ऐसे में सोशल मीडिया का सावधानीपूर्वक उपयोग ही हमें ऑनलाइन ठगी तथा साइबर अपराध के गंभीर खतरों से बचा सकता है।

साइबर सुरक्षा उपलब्ध कराने के लिये सरकार को और भी प्रभावी कदम उठाने की आवश्यकता हैं। इस दिशा में जागरूकता बढ़ाना और साइबर सुरक्षा के महत्व को समझना अत्यंत आवश्यक है।

महोदय, अतः मेरी सरकार से यह माँग है कि इस पर ध्यान दिया जाए।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The hon. Member, Dr. Bhim Singh (Bihar), associated himself with the Special Mention made by Dr. Laxmikant Bajpayee.

Demand for securing rights and protections for domestic workers

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Sir, lack of comprehensive legal protections for domestic workers has long plagued India. Despite their vital role in households, they suffer from exploitation and unsafe working conditions. Domestic work in India is largely unregulated. As per the National Domestic Workers' Movement, 90 per cent of India's domestic workers are women or children aged 12 to 75, with 25 per cent under age-14. Most are illiterate and engaged in tasks such as cooking and cleaning, traditionally seen as women's work and considered subservient. Most of these workers lack formal contracts or protection under recently passed Labor Codes, leaving them vulnerable to exploitation. This situation is worsened by societal